शिवबाबा की मुरली

महाशिवरात्रि शिव –संकल्प

14.02.99 (कम्पिल)

(प्राइमरी नालेज पर आधारित)

शिव माना कल्याणकारी। तो देख लें हम अपने प्रति , अपने परिवार के प्रति, अपने देश और विश्व के प्रति कितने विश्व कल्याणकारी बने हैं ? शुभ संकल्प माना पाजिटिव संकल्प, श्रेष्ठ संकल्प , अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी क्ल्याणकारी संकल्प। आत्मा के जितने–जितने पाप भस्म होंगे उतना वो शुद्ध संकल्प करने वाली बनेगी। क्यों ? क्योंकि आज सारी दुनियाँ अशांत हो रही है। मन अशांत है तो तन भी अशांत हो जाता है। मन के संकल्प बीज हैं। इसलिए कहा गया है कि ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची गई। सिर्फ़ ब्रह्मा के संकल्प से ही नहीं हम सब ब्रह्मा की औलाद हैं। सारी सृष्टि ब्रह्मा की औलाद है। तो हम अपने लिए भी अनेक जन्म जन्मान्तर के लिए शुभ संकल्पों से अथवा अशुभ संकल्पों से अपनी सृष्टि रचते हैं। ये अभी संकल्पों का खेल है। सिर्फ़ टाइटिल धारण करना हम ब्रह्माकुमार–कुमारी हैं माना ब्राह्मण और ब्राह्मणी हैं , हम ब्रह्मा की आदि सन्तान हैं, जेनरेशन हमारे से शुरू हो रही है लेकिन अन्दर से संकल्पों में कालिख निकलती रहती है , संकल्पों का प्रदूषण फैलता रहता है। तो वो पक्का ब्राह्मण नहीं है। अपना भी अनिष्ट करता है , अपने परिवार का भी अनिष्ट करता है , और देश और विश्व का भी अनिष्ट करता है। इसलिए बाबा ने कहा कि मधुबन के वायब्रेशन्स सारी दुनियाँ में फैलते हैं। इसलिए अभी हम मधुबनवासी ब्राह्मण बच्चों के ऊपर संकल्पों को कन्ट्रोल करने की बहुत जिम्मेवारी है। कोई भल कैसा भी पार्ट बजाय रहा है , लेकिन हमारे अन्दर से ये भावना हो ये आत्माएँ जो पार्ट बजा रही हैं , ये अपने 63 जन्मों की रील घुमा रही हैं। "बनी बनाई बन रही , अब कुछ बननी नाय"। ये 63 जन्मों का, गिरती कला के जन्मों का, जो पाप और पुण्य का लेप–छेप हर आत्मा के अंदर समाया हुआ है , वही इस समय संगमयुग में रील चलती है और जो रील चलती है उस रील में सब नूँध होता जाता है। अच्छा भी नूँध हो रहा है , बुरा भी नूँध हो रहा है। हर आत्मा अपने–अपने संस्कारों से बंधी हुई है। हाँ , बुद्धि में ज्ञान मिला हुआ है तो ईश्वरीय ज्ञान से वो अपने संस्कारों को काट सकती है , समझ सकती है – ये दैवी संस्कार हैं , ये आसुरी संस्कार हैं। ये दैवी संकल्प हैं , ये आसुरी संकल्प हैं 63 जन्मों का जो लेप–छेप लगा हुआ है , एक दूसरे के साथ जो हिसाब–किताब बंधा हुआ है वो अभी इस अंतिम जन्म में पूरा हो रहा है। बिना किसी हिसाब–किताब के कोई आत्मा संबन्ध– सम्पर्क में आती नहीं है। सारी सृष्टि पर हम सभी ब्राह्मणों का ये अंतिम जन्म है। ब्राह्मणों का ही नहीं सारी सृष्टि का ये अंतिम जन्म है।

आज से 5000 वर्ष पहले भी परमात्मा ने आकर अर्जुन को निमित्त बनाकर कहा था – " हे अर्जुन ! ये सब मेरी दाढ़ों के बीच चबाये जाने वाले हैं "। मुँह खोल के दिखा दिया। ये सारी सृष्टि इन दाढ़ों के बीच में आई हुई पड़ी है। वो दाढ़ें कोई दूसरी नहीं हैं। जो आसमान में और जमीन के अंदर , समुद्र के अंदर , सुरंगों में एटम बम भरे पड़े हैं , वही भगवान की दाढ़े हैं। आज से 60 वर्ष पहले इस घातक चीज़ का नामनिशान नहीं था। 60 वर्ष पहले ढेर के ढेर भगवान इस सृष्टि पर नहीं थे। खास करके भारतवर्ष में। 60 वर्ष से पहले असली भगवान भी नहीं आया हुआ था क्योंकि सच्चा भगवान जब सृष्टि पर आता है , सच्चा हीरा जब आता है , तो डुप्लिकेट हीरे भी बनते हैं। अभी ये डुप्लिकेट हीरे सब शान्त हो जायेंगे। असली हीरा अब सारी सृष्टि में चमकने वाला है। जैसे बड़े–बड़े ज्योतिषियों ने बताया हुआ है कि "पूर्वीय देशों में कोई एक ऐसा देश है जहाँ पवित्रता को विशेष मान दिया जाता है। वहाँ से वो शक्ति उदय हो चुकी है और वो बीज से सुधार करेगी। बीज है ही "मन"। कहते हैं – "मन के हारे हार और मन के जीते जीत"। मन को अगर कन्ट्रोल कर लिया , मन को अगर एकाग्र कर लिया तो ये जो विजय वर्ष बताया है वो सार्थक हो जायेगा। विजय वर्ष का मतलब ही है "संघर्ष

करना और विजय पाना"। लेकिन किनकी विजय होगी? जिन्होंने एकाग्रता के आधार पर अपना ऐसा अभ्यास बना लिया है। कैसा अभ्यास ? कि पाजिटिव संकल्प ही चलाने हैं। निगेटिव संकल्प न अपने लिए न दूसरों के लिए चलाना है। एकाग्रता का अभ्यास होगा तब ही ऐसा सम्भव हो सकता है। उसके लिए पहली सीढ़ी बता दी – आत्मिक स्थिति। "मैं आत्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हूँ। मैं आत्मा चमकता हुआ सितारा हूँ।" मस्तक पर बिंदी या टीका लगाने की ज़रूरत नहीं है लेकिन उस स्थिति में टिकने की ज़रूरत है। टीका या बिंदी आत्मिक स्मृति में टिकने की निशानी है। इसलिए गीता में लिखा हुआ है –मनुष्य जब शरीर छोड़े तब "भ्रूवोर्मध्ये प्राणं आवेश्य सम्यक्"। अर्थात् – भृकुटि के मध्य में अपनी आत्मा को भली भांति एकाग्र करे। अपने को एकाग्र करने की ये पहली सीढ़ी है। जिसके लिए अर्जुन को बताया, अर्जुन ने पूछा, मन बहुत चंचल है। तो भगवान ने कहा – "अभ्यासेन तु कौंतेय वैराग्येण च ग्रह्यते"। अर्थात् मन को भली भांति एकाग्र करने का अभ्यास करें और इस पुरानी दुनियाँ से बार–बार वैराग भाव उत्पन्न करें। वैराग लाने के लिए ये बुद्धि में आना ज़रूरी है कि इस दुनिया का शीघ्र ही विनाश होने वाला है। इसके लिए भरपूर सामग्री तैयार हो चुकी है।

कलियुगी , पापाचारी दुनियाँ जब नष्ट होने वाली होती है , तभी भगवान का आना साबित होता है। रामराज्य में भगवान को आने की क्या दरकार ? फिर दिखाया है , राम के साथ रावण भी था। लेकिन वो सब बातें कहाँ की हैं ? ये सब भूल चुके। वास्तव में कलियुग के अन्त में इस सृष्टि पर तब परमात्मा अवतरित होता है जबकि सारी सृष्टि पतित हो जाती है तब ये चार युगों की शूटिंग होती है। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर ये जो इतना बड़ा ड्रामा है जो हम पार्ट बजा रहे हैं , ये चार सीन्स का ड्रामा है। सतयुग, त्रेतायुग , द्वापरयुग और कलियुग। ये चार सीन्स का ड्रामा ; इस अंतिम युग में , अंतिम जन्म में जबकि परमात्मा इस सृष्टि पर आकर सृष्टि को पलटता है, पापी कलियुग से पुण्यात्मा देवताओं की सतयुगी दुनियाँ बनाता है। इस समय चारों युगों की शूटिंग होती है। शूटिंग का सारा हिसाब–किताब शास्त्रों में लिख दिया है – "संभावामि युगे–युग " मैं हर युग में आता हूँ। माना शूटिंग पीरियड में वो परमात्मा ब्राह्मणों के बीच में चार बार प्रत्यक्ष होता है। सतयुगी शूटिंग के अन्त में , त्रेतायुगी शूटिंग के अन्त में , द्वापरयुगी शूटिंग के अन्त में और कलियुगी शूटिंग के अन्त में। उस हिसाब से अभी द्वापरयुगी शूटिंग का अन्त हुआ है। अभी सम्पूर्ण प्रत्यक्षता सारे संसार के सामने होनी बाक़ी है। इंटरनेट के द्वारा प्रत्यक्षता होगी। जिसको कहते हैं कम्प्यूटर , टी.वी के द्वारा प्रत्यक्षता होगी, रेडियो के द्वारा प्रत्यक्षता होगी, अख़बारों के द्वारा प्रत्यक्षता होगी। सारा संसार जब तक उस सुप्रीम सोल बाप को पहचानता नहीं है , जानता नहीं है , तब तक इस सृष्टि का टोटल विनाश नहीं हो सकता। इसीलिए शास्त्रों में कहा है कि सब एक में समा गये माना परमात्मा का जो संकल्प है , परमात्मा के अंदर इस सृष्टि का जो ज्ञान है , हर मनुष्य मात्र के अंदर समा जायेगा। कोई के भी संकल्प उस परमात्मा बाप के विरोध में नहीं चलेंगे। चाहे कोई कितनी भी नास्तिक से नास्तिक आत्मा क्यों न हो, वो भी इस सृष्टि पर पलटने वाली है। जो अहंकार में भरे हुए रशियन्स हैं या क्रोधी क्रिश्चियन्स हैं जिन्होंने एटमबम बनाय रखे हैं , दुनियाँ को डराय रहे हैं कि हम विध्वंस कर देंगे, हम ये कर देंगे , हम वो कर देंगे। वो भी होपलेस हो जायेंगे। अंत में वो आत्माएँ भी कहेंगी ओ गॉडफादर रहम करो और वो नतमस्तक हो जायेंगे। झुक जायेंगे। इसलिए हमारे यहाँ ये परम्परा चल रही है , जब सभा समापन होती है या कोई यज्ञ कार्य सम्पन्न होता है या आरती वगैरह पूरी होती है या कोई अनुष्ठान पूरा होता है तो क्या कहते हैं ? विश्व का कल्याण हो, प्राणियों में सद्भावना हो , अधर्म का नाश हो। सत् धर्म की स्थापना हो। ये शुभसंकल्प हर प्राणि–मात्र के अंदर से प्रैक्टिकल अनुभूति में निकलेंगे। तब इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर जो आखिरी सीन है वो सम्पन्न हो जायेगा और आखिरी सीन जब सम्पन्न होता है तो त्रिमूर्ति में से, तीन देवताओं में से जो सबसे ऊँचा देवता महादेव माना जाता है , जैसे यज्ञ कार्य होता है तो यज्ञ कार्य में अंतिम आहुति किसकी मानी जाती है ? कौन से देवता की मानी जाती है ? शंकर की। तो वो अंतिम आहुति जब होती है तब वो बात प्रत्यक्ष हो जाती है, हर–हर, बम–बम महादेव। ये जो एटमिक बम बने हुए हैं , इनसे सारा कार्य समापन हो जायेगा। ये बम भी कल्याणकारी हैं क्योंकि सीधी अंगुली से घी नहीं

निकलता है। अभी परमात्मा बाप प्यार से पढ़ाई पढ़ाय रहा है, बताय रहा है कि – बच्चे अब श्रेष्ठ संकल्प करो। संकल्प रूपी बीज जब श्रेष्ठ बोया जायेगा तो वाचा भी सुधरेगी। कम बोलो– धीरे बोलो–मीठा बोलो। वाचा में सुधार आयेगा और वाचा भी जब सुधरेगी, दृष्टि, वृत्ति, मन के संकल्पों के आधार पर सुधरेगी, तो कर्मों में भी सुधार आयेगा। फिर कर्मेन्द्रियों से जो भी कर्म कर रहे हैं वो दुःख देने वाले कर्म नहीं हो सकते। सुख देने वाले ही कर्म होंगे। तो हर तरीके से सुधार होता है। लेकिन उसका बीज क्या है? संकल्प। ये सत् संकल्प , शुभ संकल्प या शिव संकल्प। परमात्मा बाप संगमयुग में आकर के हमको ये दात देते हैं कि अभी हमें बीज को सुधार लेना है। पत्तों–पत्तों को पानी देने से कुछ भी नहीं हुआ है। कितने हॉस्पिटल खोलते चले जा रहे हैं, कितनी दवाइयाँ बनती चली जा रही हैं। ज्यूँ–ज्यूँ दवा की मर्ज बढ़ता गया , लेकिन फायदा तो नहीं हो रहा है। कितने धर्म बढ़ गये , कितने धर्मों की अलग–अलग प्रकार की धारणायें बढ़ गईं। अलग–अलग प्रकार के उपदेश बन गये। लेकिन दुनियाँ में सौहार्द , प्रेम , स्नेह घटता जा रहा है। परमात्मा आकर सब जातियों को मिला करके एक जाति बनाता है। सब धर्मों को मिला करके एक सत् धर्म की स्थापना करता है। सब देशों को मिला करके एक ऐसा देश तैयार करता है जो सारे विश्व का प्रतिनिधित्व करे। सब भाषाओं को एक भाषा में मर्ज कराय देता है। इसका सैम्पल ज़रूर इस सृष्टि पर कहीं ना कहीं अभी देखा जाना चाहिए। अगर ज्योतिषियों की वो वाणी सच्ची साबित होनी है तो प्रैक्टिकल में ये बात देखी जानी चाहिए।

देश–विदेश की सरकारें तो बहुत ही प्रयत्न कर रही हैं कि जनसंख्या न बढ़े। परिवार नियोजन हो जाये। तो आर्टिफिशियल दवाईयों, कृत्रिम साधनों, आपरेशन वगैरह–इनके द्वारा अपने–अपने प्रयत्न कर रही हैं। लेकिन परमात्मा आ कर एक ही प्रयत्न ऐसा बताता है जो गीता का सबसे श्रेष्ठ ज्ञान गृहस्थियों के लिए है। अर्जुन! ये काम और क्रोध तेरे महाशत्रु हैं। तू उनको त्याग। दुर्योधन , दुःशासन ये तेरे महाशत्रु हैं–ये नहीं कहा, क्या कहा ? काम और क्रोध ये महाशत्रु हैं। घर – गृहस्थ में रह करके नर अर्जुन और नारी द्रौपदी कैसे काम विकार के ऊपर विजय प्राप्त कर सकते हैं वो परमात्मा बाप आकर सिखाय रहे हैं। अभी दुनियाँ को उस बात पर भले विश्वास हो या न हो लेकिन परमात्मा इस सृष्टि पर आकर ऐसा परिवार तैयार कर रहा है जो परिवार सारे विश्व में इस बात को सार्थक कर देगा जो हमारा भारतीय नारा है , "वसुधैव कुटुम्बकम्"। चाहे किसी भी धर्म का हो, जाति या किसी भी सूबे या देश का हो , चाहे किसी भी भाषा का हो, वो सब मिल करके एक परिवार में समाय जाने वाले हैं। जो एटमिक विभीषिका है और उसके आधार पर जो प्राकृतिक प्रकोप होने वाले हैं उनसे भी एटम बम फटेंगे तो पृथ्वी डोलायमान होगी। भूकंप आयेगा तो दुनियाँ की जितनी भी बड़ी ते बड़ी, ज़्यादा से ज़्यादा जनरेशन है जो कि बड़ी–बड़ी बिल्डिंगों में रही पड़ी है , वो सब नष्ट हो जायेगी। परमात्मा बाप के उस परिवार के जो भांति बनेंगे, जिनका हमारे शास्त्रों में गायन है–भारतीय परम्परा में 9 लाख सितारे , आसमान के जड़ सितारे नहीं , ये भृकुटि के मध्य में रहने वाले चैतन्य सितारे परमात्मा के गले का हार बनकर के रहेंगे वह परमात्मा का परिवार है। ये परमात्म परिवार अब तैयार हो रहा है।

ये शिवरात्रि बहुत श्रेष्ठ शिवरात्रि है। रात्रि क्यों कहा जाता है ? शिवरात्रि क्यों कहा जाता है ? सिर्फ़ रात्रि नही ंकहते, क्या कहते ? महाशिवरात्रि। और मनाई भी कब जाती है ? माघ मास के महीने में और कौन सी तिथि ? अमावस्या से एक दिन, दो दिन पहले। इसका अर्थ क्या हुआ ? वो स्थूल अंधकार की बात नहीं है। कौन से अंधकार की बात है ? जैसे टी.वी. में सीरियल आता है , शक्तिमान में असुर क्या बोलते हैं? अंधेरा कायम रहेगा। जो आध्यात्मिकवाद के दुश्मन हैं वो सत्यता को प्रत्यक्ष नहीं होने देना चाहते और भारत देश ही एक ऐसा देश है जिसकी जान आध्यात्मकवाद के अंदर समाई हुई है। अगर हम आध्यात्म में जियेंगे, अपने जीवन का ये लक्ष्य रखेंगे तो भारत का उत्थान हो सकता है। बाक़ी दुनियाँ की कोई ताकत नहीं जो भारत का उत्थान कर सके।

अधि + आत्मा। आत्मा के अंदर क्या है ? ये जाने। परमात्मा भी आत्मा ही है। आत्मा के अंदर क्या है ? ये जानने के लिए लालसा पैदा होगी परमात्मा के अंदर क्या है ? वो भी जानने की लालसा पैदा होगी। आत्मा और परमात्मा का अगर पूरा ज्ञान हो और हर प्वाइन्ट वार अभी से वो सत्य साबित होता है तो खुशी की लहर हर मनुष्य आत्मा के अंदर दौड़ेगी। परिस्थितियाँ भल कैसी भी आयें लेकिन एकाग्रता की शक्ति से हर आत्मा अपने को खुशी में सेट कर सकती है। उसको कहते हैं , जीवनमुक्ति का वर्सा। जीवन रहे लेकिन दुःख अनुभव न हो ज्ञान की ऐसी पराकाष्ठा हो जाये। जीवन रहे लेकिन दूसरों को सुख देने का प्रयत्न करे, दुःख देने का प्रयत्न न करे। न दुःख ये बात बड़ी आसानी से समझ में आ जाती है कि दुःख देना नहीं है, लेकिन जो मुख्य बात है वो भूल जाती है कि हम किसलिए दुःखी होते हैं? भारत वर्ष में जो गीता का उपदेश बहुत पुराना चला आ रहा है–" यस्मान्नोद्विजते लोको। लोकान्नोद्विजते च यः।। " अर्थात् – वही सम्पन्न मनुष्य है जिससे दूसरे मनुष्य उद्वेग को प्राप्त न हों और वो दूसरों से उद्वेगित न हो। दूसरा कोई भले दुःख देने की कोशिश करे लेकिन वो दुःखी न हो। ऐसा ही हर आत्मा को अपने को बनाना है और जो बनाने वाला है, सहयोग देने वाला है , आगे बढ़ाने वाला है , वह हमारा गुरु है। गुरु ही नहीं सद्गुरु है क्योंकि दुनियाँ में गुरु तो बहुत ही हुए और जितने भी गुरु हुए वो सब मनुष्य गुरु हुए हैं। मनुष्य गुरुओं से तो दुनियाँ नीचे गिरती गई। आज दुनियाँ का ये हाल हो गया कि एक परिवार के भांति भी आपस में प्यार और स्नेह के आधार पर नहीं चल सकते। अब सद्गुरु की आवश्यकता है और वो सद्गुरु इस सृष्टि पर आकर सब गुरुओं का भी कल्याण करता है। इसलिए गीता में लिखा है , "परित्राणाय साधूनाम " किसलिए आता है ? जो भी साधू , संत , महान पुरुष हैं , जो भी गुरु हैं , उन सबकी रक्षा करने के लिए आता है। वो अभी इस सृष्टि पर आ चुका है। तो हम सच्ची–सच्ची शिवरात्रि मनायें और संकल्प लें कि कोई भी हालत में हम किसी भी प्रकार के दुष्ट संकल्प अपने मन में नहीं आने देंगे। चाहे जैसी भी परीक्षा आये। इस बात में जितना हम ईश्वर के कार्य में सहयोगी बनेंगे उतना हम सच्ची–सच्ची शिवरात्रि मनायेंगे। जितने परसेंटेज में निगेटिव संकल्प करेंगे उतने परसेंटेज में मात खायेंगे। रात्रि माना अंधकार, अज्ञान का अंधकार जो आज सृष्टि पर फैला हुआ है। जिस चीज़ के लिए जानने की ज़रूरत है , दुनियाँ नहीं जानना चाहती। हर मनुष्य के पास जन्म से ही अपने परिवार के अंदर से जो प्राप्ति होती है तनबल , धनबल , जनबल और मनोबल कुछ न कुछ मिलता ज़रूर है। लेकिन बड़े होकर जितना–जितना बौद्धिक विकास होता जाता है अपनी सारी शक्ति धन इकट्ठा करने के पीछे लगाते हैं, तनबल इकट्ठा करने के पीछे लगाते हैं या जनबल इकट्ठा करने के पीछे लगाते हैं। लेकिन ये तीनों चीजें गौण हैं। इनका इतना महत्व नहीं है। जितना मनोबल का महत्व है। मन की शक्ति सुबह से लेकर शाम तक और रात को सोते हुए स्वप्न में भी लगातार बिखरती रहती है। कभी मन इधर जाता है , कभी उधर जाता है। मन है बीज। इस तरह जन्म जन्मान्तर आत्मा रूपी चैतन्य बीज की शक्ति क्षीण होती गई। यहाँ तक कि शरीर भी कमज़ोर होते गये। मन रूपी आत्मा का बीज बार–बार जन्म लेने से कमज़ोर होता गया। जिसके कारण शरीर रूपी वृक्ष भी कमज़ोर होते गये। आज से 400 साल पहले की महाराणा प्रताप की जो तलवार म्यूजियम में रखी है वह तलवार आज कोई सामान्य ब्यक्ति चला भी नहीं सकता। जब उनकी तलवार ही इतनी भारी थी , तो मनुष्य कितने शक्तिशाली होंगे। उनकी लंबाई भी आजकल के मनुष्यों से ऊँची थी। विल पावर की कमी होने के कारण आज के मनुष्य की औसत आयु 30 साल रह गई है। हर आँख पर चश्मा लग गया है। आत्मा की ताकत क्षीण हो जाने से उसमें लाइट भरने के लिए परमात्मा इस सृष्टि पर आता है और बताता है कि बच्चे, अब ये पत्तों–पत्तों को पानी देना बंद कर दो। ये एकाग्रता की शक्ति बढ़ाओ। मैं भी शिव ज्योतिर्बिन्दु का बच्चा सितारा आत्मा हूँ। जिस ज्योतिर्बिन्दु सितारा का यादगार शिवलिंग मंदिरों में बनाते हैं। जिसे ज्योतिर्लिंगम् कहा जाता है। वो शिवलिंग का पत्थर ऐसे शरीर रूपी लिंग की यादगार है जो अपनी कर्मेंद्रियों को भूला हुआ रहता है। जिसका हमारे भारतीय परम्परा में नाम दिया है – "शंकर"। उसको महादेव कहा जाता है। उसका टाइटिल है – "विश्वनाथ"। योगबल के आधार पर सारे विश्व के ऊपर कंट्रोल करने वाला है। उसमें परमात्मा शिव की सोल (सुप्रीम सोल) समाकर

कार्य करती है। लेकिन लोग नहीं जानते कि शिव की आत्मा अलग है , जो जन्म–मरण के चक्कर में नहीं आती है। गर्भ से जन्म नहीं लेती है, जबकि राम (शंकर) की आत्मा जन्म–मरण के चक्र में आती है। शंकरलिंग नहीं कहा जाता है, शिवलिंग कहा जाता है। शंकररात्रि नहीं कही जाती है। क्या कहा जाता है? महाशिवरात्रि। शंकर हमेशा ध्यानमग्न अवस्था में दिखाया गया है। अब ये ध्यानमग्न बैठा हुआ जो व्यक्ति दिखाया गया वो किसको याद कर रहा है ? अपने से ऊँचे की याद कर रहा है, या अपनी याद में बैठा हुआ है ? ज़रूर उससे भी कोई ऊँचा है। जो हम श्लोकों में गाते रहे– "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वराः। उनके भी ऊपर '' गुरुः साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्री गुरुवेनमः। " माना ब्रह्मा गुरु है , विष्णु गुरु है और महेश्वर (शंकर) गुरु है लेकिन इन तीन देवताओं में से भी बड़ा कौन ? परमब्रह्म। उससे बड़ा कोई नहीं। लेकिन वो बड़ा किस आधार पर – वो जन्म–मरण के चक्र में नहीं आता, वो सिर्फ़ प्रवेश करता है। जो गीता में अक्षर आया हुआ है , "प्रवेष्टुम"। अर्थात् मैं प्रवेश करने योग्य हूँ। गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ। अगर वो भी गर्भ से जन्म लेने लगे , जन्म–मरण के चक्र में आने लगे तो हम आत्माओं को छुड़ाने वाला इस सृष्टि पर कोई नहीं है। वो '' परात्पर '' परे ते परे रहने वाला परमब्रह्म इस सृष्टि पर अब फिर से आया हुआ है। चाहे ब्रह्मा, चाहे विष्णु,चाहे शंकर, चाहे उन्हे राम कह चाहे उन्हें कृष्ण कहें क्योंकि सृष्टि रूपी रंगमंच के वो रामकृष्ण ही विशेष हीरो–हीरोइन हैं। अंग्रेजों में उनको एडम और ईव कहा जाता है। मुसलमानों में उनको आदम और हव्वा कहा जाता है। जैनियों में उनको आदिनाथ और आदिनाथिनी कहा जाता है। वो सृष्टि के आदि पुरुष हैं। उनको नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनाने के लिए परमात्मा को आना पड़ता है। वो परमात्मा उस महान समय पर आता है जबकि सारी सृष्टि अज्ञान के अंधकार में डूबी हुई होती है। अभी वो फिर से आया हुआ है। सारी दुनियाँ अपने–अपने प्लैन बनाकर दौड़म–दौड़ कर रही है। किसी को पता ही नहीं है , क्या होने वाला है ? कौन सा जमाना आने वाला है और कैसा सीन हम सबके सामने , सारी दुनियाँ के सामने आने वाला है ? किसी को कुछ पता नहीं। सब अपने–अपने दौड़ में लगे हुए हैं। अपनी–अपनी प्लानिंग में लगे हुए हैं। सच्चाई जब प्रत्यक्ष होगी तब अंत में कहेंगे –"राम नाम सत्य है"। वो राम जिसको दो हिस्सों में कहा जाता – एक निराकार और एक साकार। निराकार माना शिव सुप्रीम सोल और साकार राम माना इस सृष्टि का जो विशेष हीरो पार्टधारी आत्मा 500 , 600 करोड़ मनुष्य – आत्माओं में से जो हीरो पार्ट बजाने वाली आत्मा है उस हीरो पार्टधारी के द्वारा परमात्मा शिव इस संगमयुग में शंकर के रूप में महेश्वर का पार्ट बजाता है। इसलिए अपनी भारतीय परम्परा में कहते हैं – औरों एक गुपुत मत सबै कहौ कर जोरि। शंकर भजन बिना नर भगति कि पावै मोर।। अर्थात् – और भी एक गुप्त विचार है कि शिव की भक्ति के बिना कोई मेरी भक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। य अलग–अलग आत्माएँ नही हैं , जो सतयुग के आदि में नारायण था " हे कृष्ण नारायण वासुदेव "वो ही कलियुग के अंत में आकर ब्रह्मा के रूप में पार्ट बजाता है। अब ये त्रेता का राम कहाँ गया? वो ही कलियुग के अंत में संगमयुग में आकर शंकर के रूप में पार्ट बजाता है। ये सृष्टि रूपी रंगमंच की शाश्वत शक्तियाँ हैं जिनके द्वारा ये सारा खेल रचाया जाता है। रचाने वाला वो डाइरैक्टर इन आँखों से देखने की चीज़ नहीं है कि चलो भाई दर्शन करे । उसके लिए शिव का तीसरा नेत्र कहा जाता है। उस नेत्र को क्या कहते हैं ? शिवनेत्र। ऐसे नहीं कि वो शिवनेत्र सिर्फ़ शंकर जी को ही था। हम सबको ये तीसरा नेत्र उघाड़ना पड़ेगा , वो शिवनेत्र (तीसरा नेत्र) अगर हमारा खुलेगा तब ही उस सुप्रीम सोल को सच्चाई से पहचान सकेंगे। वरना इन आँखों से परमात्मा देखने की चीज़ नही है। आज देखेंगे , दूसरे बता देंगे कि ये है भगवान , वो रहा भगवान और कल माया ऐसी सवार हो जायेगी ,कौन भगवान ? ऐसा भगवान होता है ? "कै समझे कवि कै समझे रवि। कवि तो कवितायें रचकर चले जाते हैं। उसका अर्थ बताने वाला कोई नहीं रहता। बाप आकर गीता का अर्थ बताते हैं माना मुरलियों का अर्थ बताते हैं। इसलिए गीता में कहा गया है , "गुह्यात गुह्यतरं ज्ञानम्" गुह्य ते गुह्य राज समझाता हूँ। उसके लिए अपनी बुद्धि को एकाग्र करना पड़े। कलियुग में हर कोई स्थूल धन कमाने में लगा हुआ है। सब चाहते हैं हम आराम से रहें। कोई भी काम नहीं करना चाहता। सरकारी अफिसर भी काम नहीं करना चाहते। सब चाहते हैं कि क्लब में

जायें , नाचें , गायें आराम से रहें। विद्यार्थी भी पढ़ना नहीं चाहते हैं। सतयुग में तो कोई मेहनत नहीं होगी। वहाँ प्रकृति ही सब काम करेगी। वहाँ खूब चित्रकारी करेंगे, गीत गायेंगे , अच्छे–अच्छे वाद्ययंत्र होंगे। नाटक करेंगे, वहाँ शिव नहीं होगा , हर आत्मा शिवस्वरूप बन जायेगी। समझने की बात है, जैसे धन कमाने में हम इतना टाइम लगा रहे हैं , परिवार के सारे भांति 24 घण्टे लगे पड़े हैं, तो एक घण्टे का टाइम कम से कम हर एक गृहस्थी आत्मा को इस आत्मा और परमात्मा की गहराई को समझने के लिए भी निकालना चाहिए। ज़्यादा नहीं निकाल सकते , 1 घण्टा तो निकाल सकते हैं अगर एक घण्टा भी सच्चाई से निकालें तो भी ये गारंटी है कि परमात्मा के गले का हार जो 9 लाख का हार गाया हुआ है। उन 9 लाख सितारों की गिनती में ज़रूर आ जायेंगे। मेहनत बहुत थोड़ी सी है और अनेक जन्मों की प्राप्ति है। जन्म जन्मांतर हमने भक्ति की है और भक्ति जब पूरी होती है तो भक्ति का फल देने के लिए भगवान स्वयं इस सृष्टि पर आ जाता है। माउण्ट आबू में पहले 7 दिन का कोर्स होता था। यहाँ भी 7 दिन की भट्ठी होती है। उसकी यादगार भक्तिमार्ग में है वह भागवत सप्ताह या रामायण 7 दिन के लिए रखते हैं। जिसकी–जिसकी भक्ति पूरी होती जाती है उसी के अंदर ये श्रद्धा–विश्वास पैदा होता जाता है कि भगवान हमको मिल गया। लेकिन अंधश्रद्धापूर्वक नहीं होना चाहिए कि किसी दूसरे ने अंगुली उठाके कह दिया कि वो भगवान है और हमने मान लिया। उसको ज्ञान की दृष्टि से समझो। एक–एक बात को समझते जायें और उस पर सही का निशान लगाते जायें अगर समझानी समझ में नहीं आती है तो उसे पूछें। क्रास क्वेश्चन करें, ईश्वर का ज्ञान कोई अंधश्रद्धा नहीं सिखाता कि सिखा दे, बोल दे कि रावण को दस सिर थे – हाँ , सत् वचन महाराज। कुम्भकरण था, 6 महीने सोता था– सत् वचन महाराज। नहीं, कोई विष्णु था , चार भुजाओं वाला था – सत् वचन महाराज। अरे , पूछो तो चार भुजाओं वाला कोई व्यक्ति था तो आज भी उसके कुल में 4 भुजाओं वाला कोई मुनष्य होना चाहिए या नहीं होना चाहिए ? सबसे बड़ी दात हमको जन्म से मिली हुई है। परमात्मा की दात है – मन , बुद्धि। हर मनुष्य आत्मा को जन्म से ही अपने–अपने तरीके की मन , बुद्धि मिली हुई है। और चीजें बाद में मिली हैं। लेकिन परमात्मा की दात मन , बुद्धि है और उसकी हमें कदर करनी चाहिए। अपनी मन , बुद्धि रूपी तराजू पर हर बात को तौलते जाइए कि ये राइट है या रांग है? फिर उसे मानें। जब तक बात बुद्धि में नहीं बैठती है तब तक मत मानो। कोई कुछ भी कहता रहे। तो इस तरह एक–एक बाात को समझकर के , जानकर के , श्रद्धा और विश्वासपूर्वक आगे बढें। अंधश्रद्धा , अंधविश्वास पूर्वक नहीं। श्रद्धा , विश्वास अलग चीज़ है और अंधश्रद्धा , अंधविश्वास अलग चीज़ है। तो श्रद्धा, विश्वासपूर्वक अगर हम समझ के चलेंगे तो ज़रूर हमारा तीसरा नेत्र खुलेगा।

वो जगतपिता "जगतं पितरं वंदे पार्वती परमेश्वरौ"। शंकर–पार्वती हर धर्म के माता–पिता हैं। तो हमारे माता–पिता का तीसरा नेत्र होगा तो हम बच्चों का तीसरा नेत्र नहीं होगा क्या? इसलिए देवताओं को भी और देवियों को भी तीसरा नेत्र दिखाया गया है। तीसरा नेत्र कोई स्थूल रूप में नहीं होता है। कौनसा होता है ? ज्ञान का नेत्र। तो ये शिवरात्रि ऐसे नहीं कि सारी रात जागरण कर लिया , रात्रि के 12 बजे शिवरात्रि पूरी हो गई। परमात्मा जब इस सृष्टि पर आता है तो हर बात का गुह्यार्थ बताता है। वो गुह्यार्थ ये है कि अब सारी सृष्टि पर अज्ञान अंधेरा छाया हुआ है , थोड़ी सी मुट्ठी भर बीज रूप आत्माएँ हैं जो गुप्त रहकर अपना कार्य कर रही हैं। सबको जगाने का कार्य कर रही हैं। जिसकी यादगार दीपावली मनाई जाती है। दीपों की अवली। दीपकों की लाइन। एक के बाद एक, 9 लाख दीपक तैयार होंगे। अब सच्ची दीपावली हमको मनानी है। विकारों की होली जलानी है। विकारों से रक्षा का सूत्र बाँधना है। ये जितने भी त्योहार हैं वो इस समय संगमयुग की विशेष यादगार है। उन यादगारों को हम सिर्फ़ मनाये नहीं लेकिन उसको प्रैक्टिकल रूप में सामने लायें। अभी तो हमारे लिए रोज शिवरात्रि है। रोज दीपावली है , रोज दशहरा है। कैसे है ? अगर इस राज़ को भी जाना तो इस अज्ञान अंधेरे का भी खात्मा हो जावेगा। अभी हमने सच्ची–सच्ची शिवरात्रि नहीं मनाई है। अभी वो टाइम आ गया है ये आध्यात्मिक कार्य की जड़ें सिर्फ़ भारत तक ही नहीं फैली हुई हैं ,

सारे विश्व में फैली हुई हैं। ये क्रांति ऐसी क्रांति है जो थोड़े समय के अंदर शुभ और अशुभ संकल्पों का विराट संघर्ष सामने लायेगी। एक–एक मन , बुद्धि रूपी आत्मा के अंदर वो क्रांति होगी। वाचिक क्रांति भी होगी और कर्मणा की क्रांति। लेकिन जो श्रेष्ठ आत्माएँ हैं वो संकल्पों से और वाचा से समग्र विश्व में क्रांति के निमित्त बनेंगी।

स्थूल खून बहाने के निमित्त नहीं बनेंगी। और जो देहअभिमानी असुर हैं वो तो स्थूल खूनी क्रांति करेंगे ही। हर कोई नं.वार विश्वपरिवर्तन के निमित्त बनेंगे।

''मननात् मनुष्यः''। मनन–चिंतन–मंथन करने से मनुष्य कहा जाता है अगर मनुष्य मनन–चिंतन–मंथन नहीं करता तो वो मनुष्य काहे का ? तो अब मन की एकाग्रता का अभ्यास करिए। हम सच्चे–सच्चे मनुष्य की औलाद बनें। मनु माना ब्रह्मा। असली ब्राह्मण बनने का समय अभी है। ब्रह्मा के आचार–विचार अपने जीवन में प्रैक्टिकल धारण करने से हम अपने पुराने जड़जड़ीभूत दुःखदायी संस्कारों को चेंज कर सकते हैं। अगर अब नहीं किया तो कब नहीं हो सकता। ये ईश्वरीय लास्ट वार्निंग है। अभी थोड़े समय में सारे संसार के अंदर टू लेट का बोर्ड लगेगा। फिर आत्माएँ हाय–हाय करेंगी। हमने ईश्वरीय संदेश नहीं लिया अथवा एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दिया। परमात्मा का गुप्त कार्य चल रहा है। जो महाभारत में प्रसिद्ध है कि पाण्डव गुप्त होकर के घूमते थे। पाण्डवों ने सब से ज़्यादा लम्बा गुप्त वास कहाँ किया ? कोई स्थान है ऐसा ? फर्रुखाबाद (उ.प्र.) में कम्पिला नगरी का ही शास्त्रों में गायन है।

लोग पूछते हैं जब इतना श्रेष्ठ ज्ञान है तो सबको पता क्यों नहीं चल रहा है ? पता क्यों नहीं चला , इतने वर्षों से चल रहा है। अरे शास्त्रों में जो गायन है वो सब झूठे हैं क्या ? अपनी भारतीय परम्परा में ज्ञान और योग को प्रदर्शन किया जाता है क्या? नहीं किया जाता है। एकान्त में कहीं जाकर गुफा में बैठकर तपस्या करते थे। अपनी कुटिया में बैठकर तपस्या की की माला भी भगवान शंकर के भुजाओं में कंगन के रूप में लपेटी हुई दिखाई जाती है। यह बड़ी माला अभी भी बड़े–2 पुराने मंदिरों में गरारी पर देखी जा सकती हैं।

रात को सोते समय – मैं आत्मा चमकता हुआ सितारा हूँ। मैं आत्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हूँ। मेरा बाप भी ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है – इसी स्मृति में सो जाने से ख़राब स्वप्न नहीं आयेंगे। सबेरे उठते ही कम से कम 10 मिनट तक कोई संकल्प न आये सिवाय आत्मिक स्मृति के।

ओमशान्ति